जड़ एवं चेतन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जड़ एवं चेतन शाश्वत हैं। दोनों अलग–अलग हैं। जड़ न तो चेतन बन सकता है और न चेतन जड़ बन सकता है। दोनों की प्रकृति और अस्तित्व अलग–अलग हैं। पानी में तेल की बूंद की तरह मिश्रण हो सकता है किन्तु अस्तित्व अलग–अलग रहता है। जड़ का अर्थ है– निर्जीव पदार्थ। इसमें वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श होता है। पंचेन्द्रियों के द्वारा इसे ग्रहण किया जात है। यह गलन–मिलन धर्मा होता है। इसमें रूपान्तरण होता रहता है। जड़ में अनुभूति नहीं होती।

चेतन तत्व असंख्य चेतनामय परमाणुओं का पिण्ड होता है। जीवात्मा चेतन है। चेतना में अनुभूति होती है। यह अमूर्त्त है। चेतना में प्रजनन, संवेदन और हलन–चलन की क्रिया होती है। चेतना में सुख–दुःख की अनुभूति होती है। शरीर जड़ और चेतन का मिश्रण है। जड़ ओर चेतन दोनों विजातीय द्रव्य हैं। आत्मा चेतन और अरूप है। शरीर अचेतन और सरूप। दोनों का संबंध कैसे हो सकता है? संसारी आत्मा सूक्ष्म और स्थूल इन दो प्रकार के शरीरों से आवेष्टित रहता है। एक जन्म से दूसरे जन्म में जाने के समय स्थूल शरीर छूट जाता है, सूक्ष्म शरीर नहीं छूटता।

सूक्ष्म शरीर धारी जीवों को एक के बाद दूसरे–तीसरे स्थूल शरीर का निर्माण करना पड़ता है। सूक्ष्म शरीर धारी जीव ही दूसरा शरीर धारण करते हैं। इसलिए अमूर्त्त जीव मूर्त्त शरीर में कैसे प्रवेश करते हैं यह प्रश्न ही नहीं उठता। संसारी दशा में जीव कथंचित् मूर्त्त भी है। उसका अमूर्त्त रूप विदेह दशा में प्रगट होता है। संसारी दशा में जीव और पुद्गल का कथंचित् सादृश्य होता है। शरीर और चेतना दोनों भिन्न धर्मक है। फिर भी इनका अनादि संबंध है। चेतन और अचेतन चैतन्य की दृष्टि से भिन्न हैं। इसलिए वे एक नहीं हो सकते, किन्तु सामान्य गुण की दृष्टि से वह अभिन्न भी हैं। इसलिए उनमें संबंध हो सकता है।

चेतन शरीर का निर्माता है। शरीर उसका अधिष्ठान है। इसलिए दोनों पर एक दूसरे की क्रिया–प्रतिक्रिया होती है। शरीर की रचना चेतन विकास के आधार पर होती है। चेतना विकास के अनुरूप शरीर की रचना होती है। शरीर रचना के अनुरूप चेतना की प्रवृत्ति होती है। शरीर निर्माण काल में आत्मा उसका निमित्त बनती है। आत्मा शरीर से सर्वथा भिन्न नहीं होती इसलिए आत्मा की परिणति का शरीर पर और शरीर की परिणति का आत्मा पर पड़ता है। देहमुक्त होने के बाद आत्मा पर शरीर का कोई प्रभाव नहीं होता, किन्तु दैहिक स्थितियों में जकड़ी हुई आत्मा के क्रियाकलाप में शरीर सहायक और बाधक बनता है।

जड़ पदार्थ में हलन–चलन नहीं होता। जैसे पत्थर लकड़ी या अन्य निर्जीव पदार्थ एक जगह रखे जाते हैं तो उसमें गति नहीं होती है। जड़ पदार्थ चेतन भाव से रहित होता है, इसलिए उसे जड़ कहा जाता है। वस्तु के हलन–चलन को गतिशीलता कहा जाता है। धर्म बहुत ही व्यापक शब्द है। इसके अंतर्गत भावों की शुद्धता, मन की निर्मलता और सात्विक विचार का अधिक महत्व है। धर्म मूलतः किसी वस्तु का सहज गुण है। इसी प्रकार जितने भी पदार्थ हैं, उन सबका स्वाभाविक धर्म होता है। जब पदार्थों में विकृति उत्पन्न की जाती है तो उनके गुण धर्म भी बदल जाते हैं। आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आती है। यह अपने स्वरूप में चैतन्य युक्त है। शेष जितने भी पदार्थ हैं, वे भौतिक तत्व हैं। उन पदार्थों में परिवर्तन, परिवर्धन होता रहता है।

आत्मा और जड़ का जब संयोग होता है तो जड़ पदार्थ भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। शरीर से जब आत्मा का संयोग होता है तो जड़ शरीर भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर से अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। मूलतः आत्मा के शुद्धि और अशुद्धि का कोई प्रश्न नहीं है। शरीर में शुद्धता और अशुद्धता देखी जाती है। यदि मानव अच्छा कर्म करता है तो पुण्यलोक की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कार्य करता है तो उसे नरक की प्राप्ति होती है। इसी को ध्यान में रखकर यह बात कही गयी है कि धर्म आत्मा को शुद्ध करता है।

आत्मा को न तो आंखों से देखा जा सकता है, न वाणी से कहा जा सकता है, न तो अन्य इन्द्रियों से उसे जाना जा सकता है, न तपस्या और कर्म से ही उसे जाना जा सकता है।

जिसके द्वारा सारी ज्ञानेन्द्रियां अपने–अपने विषय का ज्ञान कराती हैं उसे किस साधन से जाना जाय। इसलिये कहा गया है कि 'ज्ञानप्रसादेन तं पश्यते' अर्थात् ज्ञान के द्वारा ही उसे जाना जा सकता है। जप, तप निखिलकर्मानुष्ठान ये सारे साधन आत्मविषयक आचार में परिगणित हैं, किन्तु ये केवल चित्त शुद्धि तक ही सीमित हैं।

शुद्ध चित्त में ज्ञान का प्राकट्य उसी प्रकार होता है जैसे स्वच्छ कांच में प्रतिबिम्बोपलब्धि होती है। यह संसार जड़तत्व और चेतनतत्व दो तत्वों से मिलकर बना हुआ है। जड़तत्व भौतिकतत्व है और आत्मतत्व आध्यात्मिक तत्व है। मानव जीवनभर पंचेन्द्रियों से जड़तत्वों का ही दर्शन करता है और उसी के साथ संबंध स्थापित किये रहता है।